बी.ए.प्रथम वर्ष
जाति (Caste)

सामाजिक संरचना एक जटिल ढांचा है जिसके भीतर विभिन्न संस्थानों, संघों और समूहों को संगठनात्मक और कार्यात्मक निर्भरता में एक साथ बांधा जाता है।जाति ग्रामीण सामाजिक संरचना का एक अनिवार्य घटक है।स्तरीकरण वांछनीय पुरस्कारों के असमान वितरण के अनुसार एक समाज के सदस्यों की रैंकिंग है,जो आम तौर पर धन, प्रतिष्ठा और शक्ति हैं। हर समाज स्तरीकृत है।यह ठीक ही कहा गया है कि एक "असंतुलित समाज, जिसके सदस्यों की वास्तविक समानता एक मिथक है, जिसे मानव जाति के इतिहास में कभी महसूस नहीं किया गया है।रूप और अनुपात भिन्न हो सकते हैं लेकिन इसका सार स्थायी है "।
भारत में हम जन्म के आधार पर सामाजिक स्तरीकरण की एक अनूठी प्रणाली पाते हैं,जिसका प्रकार पूरी दुनिया में अन्यत्र नहीं पाया जाता है। हालाँकि कोई भी महान व्यक्ति हो सकता है,उसकी कोई अलग इकाई और अस्तित्व नहीं है,वह जिस जाति से है।
अंग्रेजी शब्द 'कास्ट' पुर्तगाली शब्द 'कास्टा' से आया है, जिसका अर्थ है नस्ल, नस्ल या तरह।भारतीय संदर्भ में जाति को 'जाति' के नाम से जाना जाता है जो जन्म या वंश को जोड़ती है।
जाति का उपयोग एक इकाई के रूप में और एक प्रणाली के रूप में किया जाता है।एक इकाई के रूप में, जाति को इकाई एक बंद स्थिति समूह के रूप में परिभाषित किया गया है।' एक प्रणाली के रूप में, जाति प्रतिबंधों की सामूहिकता, अर्थात् सदस्यता, व्यवसाय, विवाह और सांप्रदायिक और सामाजिक संबंधों के परिवर्तन पर प्रतिबंध को संदर्भित करती है।
स्तरीकरण की प्रणाली के रूप में जाति को दो तरह से देखा गया है। कुछ समाजशास्त्रियों ने जाति को एक सांस्कृतिक घटना माना है। दूसरों ने इसे एक संरचनात्मक रूप में देखा है। जो लोग जाति को एक सांस्कृतिक घटना मानते हैं वे इसे विचारों, मूल्यों और विश्वासों की एक प्रणाली के रूप में मानते हैं।दूसरी ओर,संरचनावादियों ने जाति को भूमिका और स्थिति की प्रणाली के रूप में देखा है।
जाति को कई तरह से परिभाषित किया गया है।
हर्बर्ट रिस्ले ने जाति को परिभाषित किया "परिवारों का एक संग्रह एक सामान्य नाम है, जो एक पौराणिक पूर्वज, मानव या दिव्य से एक सामान्य वंश का दावा करता है, एक ही वंशानुगत कॉलिंग का पालन करने के लिए प्रोफेसर है और इसे उन लोगों द्वारा माना जाता है जो एक गठन बनाने के लिए एक राय देने के लिए सक्षम हैं। एकल सजातीय समुदाय। "
केतकर ने जाति को "दो विशेषताओं वाले एक सामाजिक समूह के रूप में परिभाषित किया है – (i) सदस्यता उन लोगों तक ही सीमित है जो सदस्यों से पैदा हुए हैं और इसमें सभी लोग शामिल हैं; (ii) सदस्यों को जाति से बाहर शादी करने के लिए एक अक्षम सामाजिक कानून द्वारा मना किया गया है "।
एम। एन के शब्दों में। श्रीनिवास, "जाति एक वंशानुगत, अंतःसंबंधी, आमतौर पर स्थानीय समूह होता है, जो एक पेशे के साथ पारंपरिक संबंध रखता है और जातियों के स्थानीय पदानुक्रम में एक विशेष स्थान रखता है। जातियों के बीच संबंध अन्य चीजों के अलावा, प्रदूषण और पवित्रता की अवधारणाओं द्वारा शासित हैं और आम तौर पर, जाति के भीतर अधिकतम समानताएं होती हैं।
आंद्रे बेटिल के अनुसार, "जाति को एक छोटे और नामित व्यक्तियों के समूह के रूप में परिभाषित किया जा सकता है, जिसकी विशेषता एंडोगैमी, वंशानुगत सदस्यता और एक विशिष्ट शैली है जिसमें कभी-कभी परंपरा, किसी विशेष व्यवसाय की खोज शामिल होती है और आमतौर पर अधिक या कम से जुड़ी होती है। पवित्रता और प्रदूषण की अवधारणाओं के आधार पर एक पदानुक्रमित प्रणाली में अलग अनुष्ठान की स्थिति। "
उपर्युक्त परिभाषाओं से यह स्पष्ट है कि जाति, सामाजिक स्तरीकरण के रूप में, अनुष्ठान शुद्धता और प्रदूषण के आधार पर समाज को विभिन्न सामाजिक समूहों में विभाजित करती है। यह एक वंशानुगत और अंतिम समूह है। इसका पारंपरिक व्यवसायों के साथ संबंध है। यह अधिकतम समानता को देखता है।
जाति व्यवस्था कई विशेषताओं को दर्शाती है। वे इस प्रकार हैं:
1. खंड विभाजन (Segmental division) : जहाँ तक जाति व्यवस्था का सवाल है, प्रत्येक जाति दूसरे से स्वतंत्र एक स्वायत्त समूह है। एक जाति में सदस्यता जन्म पर आधारित है। इसलिए यह अपरिवर्तनीय है। इस कारण एक जाति से दूसरे जाति में गतिशीलता असंभव है। प्रत्येक जाति के जीवन का अपना तरीका है। इसके अपने नियम और कानून, रीति-रिवाज, परंपराएं, प्रथाएं और रिवाज हैं। इसका अपना शासी

निकाय है जिसे जाति नियमों को लागू करने के लिए जाति परिषद कहा जाता है। इस तरह प्रत्येक जाति अपने आप में एक सामाजिक संसार है।

2. पदानुक्रम (Hierarchy) : जाति व्यवस्था प्रकृति में पदानुक्रमित है। इसमें चार वर्ण या जाति शामिल हैं। रैंकिंग के अवरोही क्रम में ये ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र हैं। दो जातियों के बीच कई जातियां हैं-ब्राह्मण और शूद्र। उनकी सामाजिक स्थिति ब्राह्मणों से उनकी दूरी पर निर्भर करती है।

वर्ना योजना के बाहर अछूत मौजूद हैं। यह पाँच-गुना वर्गीकरण अनिवार्य रूप से एक धार्मिक एक है, जो सापेक्ष अनुष्ठान की शुद्धता के आधार पर भेद करते हैं। डी। सी। भट्टाचार्य ठीक ही मानते हैं कि "न केवल विभिन्न जातियाँ एक पदानुक्रम का निर्माण करती हैं, बल्कि उनके द्वारा पेश किया जाने वाला व्यवसाय, उनके आहार की विभिन्न वस्तुएँ और वे सभी रूप अलग-अलग पदानुक्रमों का पालन करते हैं।"

3. सगोत्र विवाह (Endogamy) : वेस्टमार्क जाति व्यवस्था के सार के रूप में एंडोगैमी को मानता है। एंडोगैमी जाति के भीतर विवाह को संदर्भित करता है। एंडोगैमी का सिद्धांत अपने सदस्यों को जाति से बाहर शादी करने से मना करता है। एंडोगैमी के नियम के उल्लंघन का मतलब होगा जातिवाद और जाति का नुकसान। गोत्र या गोत्र के भीतर विवाह निषिद्ध है। बहिर्गमन का यह नियम ग्रामीण सेटिंग में कड़ाई से मनाया जाता है। इसके अलावा, इस संदर्भ में यह ध्यान देने योग्य है कि औलोमा और प्रेटिलोमा विवाह के रूप में एंडोगैमी के शासन के कुछ अपवाद हैं।

4. व्यवसाय की शुद्धता (Fixity of occupation): जाति व्यवस्था कब्जे की शुद्धता की विशेषता है। व्यवसाय वंशानुगत हैं और एक जाति के सदस्यों से अपेक्षा की जाती है कि वे बिना किसी असफलता के अपने पारंपरिक व्यवसाय का पालन करें। ब्राह्मण धार्मिक आयोजन करने में लगे हुए हैं। वाशरमेन इसे अन्य जाति के लोगों के कपड़े धोने के लिए अपना कर्तव्य मानते हैं। हालांकि, व्यापार, कृषि, सैन्य सेवा जैसे कुछ व्यवसाय किसी की कॉलिंग के रूप में माने जाते हैं।

5. कमेंसिटी (Commensality) : संप्रेषणीयता विश्वासों, प्रथाओं, नियमों और विनियमों को संदर्भित करती है जो अंतर-जातीय संबंधों को निर्धारित करती हैं और भोजन और पानी के प्रकार के संबंध में देखी जाती हैं। किसी जाति के सदस्य केवल अपनी जाति या जाति से ही aste कच्छ भोजन 'स्वीकार करते हैं, जो कि उनकी अपनी जाति से अधिक है।

उन्हें अन्य जातियों के सदस्यों से पानी स्वीकार करते समय कुछ प्रतिबंधों का पालन करना आवश्यक है। ब्राह्मण प्याज, लहसुन, गोभी, गाजर, बीटरूट आदि का सेवन नहीं करते हैं। अछूतों को छोड़कर गोमांस खाना स्वीकार्य नहीं है।

एक जाति के सदस्य सामाजिक संभोग से संबंधित कुछ प्रतिबंधों का भी पालन करते हैं। कुछ ऐसी जातियाँ हैं जिनके स्पर्श को प्रदूषण माना जाता है और इसलिए उन्हें 'अछूत' माना जाता है। उदाहरण के लिए, केरल में, एक नायर एक नंबुद्री ब्राह्मण से संपर्क कर सकता है, लेकिन उसे स्पर्श नहीं करेगा।

6. शुद्धता और प्रदूषण (Purity and Pollution): जाति व्यवस्था की स्थापना पवित्रता और प्रदूषण की अवधारणाओं पर की गई है। पवित्रता और प्रदूषण की अवधारणाएं पदानुक्रमित क्रम में एक जाति या उप-जाति की स्थिति का निर्धारण करने के मुख्य मानदंडों में से एक प्रदान करती हैं।

ब्राह्मण को सबसे शुद्ध समूह कहा जाता है। उन्हें जाति पदानुक्रम के आंचल में रखा गया है। दूसरी ओर, हरिजन, जिन्हें वर्ना योजना में शामिल नहीं किया गया है, को सबसे अधिक प्रदूषणकारी माना जाता है और सबसे कम रैंक किया जाता है।

7. अनोखी संस्कृति (Unique culture) : प्रोफ़ेसर घोरी के अनुसार, "जातियाँ अपने आप में छोटी और पूर्ण सामाजिक दुनिया हैं, जो निश्चित रूप से एक दूसरे से चिह्नित हैं, हालांकि बड़े समाज के भीतर ही मौजूद हैं।" हर जाति की एक अलग संस्कृति, रीति-रिवाज़ और परंपराएँ हैं जो इसे अन्य जातियों से अलग करती हैं। । एक जाति के भोजन की आदतें, व्यावसायिक विशेषज्ञता, व्यवहार पैटर्न आदि को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को समाजीकरण की प्रक्रिया के माध्यम से सौंप दिया जाता है।

8. जाति पंचायत (Caste Panchayat) : जाति पंचायत जाति के कोड और अनुशासन से संबंधित सभी मामलों से संबंधित है। शादी के वादे को तोड़ना, पत्नी द्वारा व्यभिचार करना, दूसरी जाति के लोगों के साथ नाजायज यौन संबंध बनाना, गायों की हत्या करना, ब्राह्मणों का अपमान करना, कर्ज न चुकाना आदि जैसे मामले जाति परिषद द्वारा निपटाए जाते हैं।

जाति पंचायत जाति के गलत सदस्यों को दंडित करती है। साथी जाति-पुरुषों के लिए डिनर पार्टी की व्यवस्था करने या शुद्धि समारोहों से गुजरने के लिए जुर्माना देने, तीर्थयात्रा करने या अलगाव से पीड़ित होने की सजा अलग-अलग है।

9. बंद समूह (Closed group) : एंडोगैमी, व्यवसाय की शुद्धता, आनुवंशिकता और अनूठी संस्कृति मिलकर जाति को एक बंद समूह बनाते हैं। मैक्स वेबर के अनुसार, "जाति निस्संदेह एक बंद स्थिति समूह है।" यही कारण है कि जाति एक बंद स्थिति समूह है, यही कारण है कि एक समूह में सदस्यता और अवरोधों के सभी दायित्व भी एक जाति में मौजूद होते हैं जहां वे उच्च स्तर पर तेज होते हैं। डिग्री।

10. एक विशेष नाम (A particular name) : हर जाति का एक विशेष नाम होता है। आम तौर पर किसी जाति के कब्जे को जाति के नाम की मदद से जाना जाता है।

11. नागरिक और धार्मिक विकलांग (Civil and religious disabilities:) : निम्न जातियों के लोग नागरिक, सामाजिक और धार्मिक विकलांगों के एक समूह से पीड़ित हैं। आमतौर पर, अशुद्ध जातियों को गांवों के बाहरी इलाके में रहने के लिए बनाया जाता है। उन्हें पूजा स्थलों, श्मशान घाटों, स्कूलों, सार्वजनिक सड़कों, होटलों आदि का उपयोग करने से मना किया जाता है।बहुत अधिक स्पर्श और कभी-कभी निचली जाति के सदस्यों की परछाई भी उच्च जाति के व्यक्ति को अपवित्र करने के लिए पर्याप्त होती है। केरल में एक नंबुदिरी ब्राह्मण को नायर के स्पर्श से अपवित्र किया जाता है, लेकिन थिया जाति के एक सदस्य के मामले में छत्तीस फीट की दूरी को टालने से बचने के लिए रखा जाना चाहिए और पुलियन जाति के सदस्य के मामले में दूरी तय करनी चाहिए निन्यानबे फीट का होना चाहिए।

12. ईश्वरीय योजना में निहित (Rooted in the divine plan) : माना जाता है कि जाति व्यवस्था को ईश्वर द्वारा ठहराया गया है और यह धर्म द्वारा समर्थित है। यह व्यवस्था कर्म के सिद्धांत, पुनर्जन्म आदि के सिद्धांत पर टिकी हुई है।

13. इंट्रा-विलेज और इंटर-ग्राम मैकेनिज्म (Intra-village and inter- village mechanisms) : अंतिम लेकिन कम से कम, जातियों के पास, अंतर-गांव और सामाजिक नियंत्रण और संघर्ष समाधान के अंतर-गांव तंत्र नहीं हैं। ठीक है, ये भारतीय जाति व्यवस्था की पारंपरिक विशेषताएँ हैं। हालांकि, इन पारंपरिक विशेषताओं को हाल के समय में औद्योगिकीकरण, शहरीकरण, आधुनिकीकरण आदि जैसे सामाजिक परिवर्तन की विभिन्न प्रक्रियाओं के परिणामस्वरूप गंभीर रूप से प्रभावित किया गया है।

डॉ0 मनीषा भूषण
असिस्टेन्ट प्रोफेसर–समाजशास्त्र